

|  |  |
|--|--|
| reuentem hylarit suscipit ad priam<br>cor emollit. offensia cito remittit. nunc<br>post remissionem si meminit. If ex mta<br>dat dñ ad uita ut peccatum paret. dat psp<br>a ut ad amorem procedat. dat sacramenta<br>ut initium cumulet. dat pcepta ut primo<br>ditet. If ex mta a se enates reducit. e<br>untes ad se induit. cadentes erigit. stat<br>tes teneat si desint. puenites i glam in<br>trouuntur. Explicit libri primi. Incipit secundus. |  |
| <b>qui agit de creatis. Capitula.</b>  |  |
| <b>D</b> e rerum creatione. <i>-----</i>   |  |
| De distinctio creaturarum in genere. <i>iiii.</i>  |  |
| Distinctio omnium tam celestium quam elementorum. <i>viii.</i>   |  |
| De natâ celorum et superiorum corporum. <i>vii.</i>  |  |
| De natâ stellarum in omnibus. <i>v.</i>  |  |
| De luce. <i>vi.</i>  |  |
| De planetis in specie. <i>vii.</i>   |  |
| De natâ iuxta elementorum. <i>viii.</i>  |  |
| De impressionib; aeris. <i>ix.</i>   |  |
| De tempore. <i>x.</i>  |  |
| <b>D</b> e anglis in omnibus. <i>xii.</i>  |  |
| Distinctio hierarchiarum. <i>xii.</i>  |  |
| De perpetiis angelorum in omnibus. <i>xiii.</i>  |  |
| De confirmatione angelorum. <i>xvii.</i>   |  |
| De perpetiis officiis singulorum ordinum. <i>xv.</i>   |  |
| De cognitio et motu angelorum. <i>xvi.</i>   |  |
| De platonibus angelorum. <i>xvii.</i>  |  |
| De custodia angelorum. <i>xviii.</i>   |  |
| De locutione angelorum. <i>xix.</i>  |  |
| De specialibus nobis angelorum. <i>xx.</i>   |  |
| <b>D</b> e casu demonis. <i>xxi.</i>   |  |
| De spirituali casu demonis. <i>xxii.</i>   |  |
| De locali casu demonis. <i>xxiii.</i>  |  |
| De restauracione ruine anglice. <i>xxiv.</i>   |  |
| Quare peccatum dñi sit irremissibile. <i>xxv.</i>  |  |
| De perpetiis demonum. <i>xxvi.</i>   |  |
| De malitia dyaboli in nos. <i>xxvii.</i>   |  |
| De lucifero specialiter. <i>xxviii.</i>  |  |
| <b>D</b> e anima quae sit per distinctionem. <i>xxix.</i>  |  |
| Quid sit anima secundum rem. <i>xxx.</i>   |  |
| Quid sit anima secundum nominem. <i>xxxi.</i>  |  |
| De triplici anima. <i>xxxii.</i>   |  |
| De potentius aetate vegetabilis. <i>xxxiii.</i>  |  |
| De potentius appetitus aetate sensibili. <i>xxxiv.</i>   |  |
| De sensu particularibus. <i>xxxv.</i>  |  |
| De sensu omnibus. <i>xxxvi.</i>  |  |
| De ymaginativa. <i>xxxvii.</i>   |  |
| De estimativa. <i>xxxviii.</i>   |  |
| De fantasia. <i>xxxix.</i>   |  |
| De memoria. <i>xl.</i>   |  |
| De vi sensibili motu. <i>xl.</i>   |  |
| De potentius cognitius. <i>xl.</i>   |  |
| De modis cognoscendi res. <i>xl.</i>   |  |
| De intellectu agente et possibili. <i>xl.</i>  |  |
| De intellectu speciatu et pratico. <i>xl.</i>  |  |
| De ratione et partib; ipsi. <i>xl.</i>   |  |
| De potentius aetate motu. <i>xl.</i>   |  |
| De voluntate. <i>xl.</i>   |  |
| De synderesi. <i>xl.</i>   |  |
| De conscientia. <i>l.</i>  |  |
| De operationibus aetate. <i>li.</i>  |  |
| De quantitate aetate. <i>li.</i>   |  |
| De immortalitate aetate. <i>li.</i>  |  |
| De libero arbitrio. <i>lv.</i>   |  |
| <b>D</b> e natâ corporis humani. <i>lv.</i>  |  |
| De physionomia. <i>lv.</i>   |  |
| Regule generalis physionomie. <i>lv.</i>   |  |
| De torso hominis. <i>lx.</i>   |  |
| De perpetiis hominibus. <i>lx.</i>   |  |
| <b>D</b> e primis parentibus. <i>lx.</i>   |  |
| De pceptis sibi datis. <i>lx.</i>  |  |
| De paradyso. <i>lx.</i>  |  |
| De casu primi hominis. <i>lx.</i>  |  |
| De ordine reparationis in nobis. <i>lx.</i>  |  |
| Explicit capitulo. De rerum creatio. cap <i>i</i> .  |  |